* आयोजन समिति द्वारा चयनित आलेखों को एक संपादित पुस्तक (ISBN के साथ) के रूप में प्रतिष्ठित प्रकाशक द्वारा प्रकाशित कराने की भी योजना है।

महत्वपूर्ण तिथियाँ :

आलेख-सारांश भेजने की अंतिम तिथि 15 मार्च 2015

पूर्ण आलेख भेजने की अंतिम तिथि 22 मार्च 2015 *सभी आलेख पीडीएफ तथा वर्ड फॉर्म में इस मेल पर भेजें:

1. anush@tezu.ernet.in 2. anushabda@gmail.com

आलेख की एक टंकित प्रति निम्नांकित पते पर भेजें:

डॉ. अनुशब्द, संगोष्ठी-संयोजक, हिंदी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम-784028

पंजीकरण विधि एवं शुल्क भुगतान:

विद्यार्थियों के लिए	: 500/-
शोधार्थियों के लिए	: 750/-
शिक्षकों एवं अन्य बुद्धिजीवियों के लिए	: 1500/-

*पंजीकरण के लिए'REGISTRAR,TEZPUR UNIVERSITY' के पक्ष में डिमांड ड्राफ्ट संयोजक के पते पर भेजें। या संगोष्ठी-संयोजक से प्रत्यक्ष रूप से संपर्क करके पंजीयन कराएँ और पंजीयन रसीद प्राप्त करें।

*पंजीयन दिनांक 26/03/15 के प्रातः 9 बजे से 10 बजे तक संभव है। अग्रिम पंजीयन से प्रतिभागियों के लिए आवास एवं भोजन के प्रबंध में सुविधा होगी।

*प्रतिभागियों को आवास की सुविधा हेतु 10 मार्च 2015 तक संगोष्ठी-संयोजक को सूचना देनी होगी।आवास का खर्च प्रतिभागियों को स्वयं वहन करना होगा।

*पंजीकरण शुल्क में संगोष्ठी-सामग्री, प्रमाण-पत्र, जलपान और केवल दोपहर का भोजन शामिल है।

संगोष्ठी स्थल: काउंसिल हाल, तेजपुर विश्वविद्यालय

संगोष्ठी से संबंधित किसी भी तरह की जानकारी के लिए संपर्क करें:

डॉ. अनुशब्द, संगोष्ठी–संयोजक, हिंदी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम-784028

दूरभाष: 08876049200, 03712-275755

ई-मेल: anush@tezu.ernet.in / anushabda@gmail.com

मुख्य संरक्षक: प्रो. मिहिर कांति चौधुरी, माननीय कुलपति, तेजपुर विश्वविद्यालय

संरक्षक: प्रो. अमरज्योति चौधुरी, माननीय समकुलपति, तेजपुर विश्वविद्यालय

सलाहकार समिति: प्रो. प्रदीपज्योति महंत,संकायाध्यक्ष,मानविकी एवं समाजविज्ञान, तेजपुर विश्वविद्यालय

प्रो. मोहन , निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान , आगरा

प्रो.प्रशांत कुमार दास, अध्यक्ष, अँग्रेजी एवं विदेशी भाषा विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय

डॉ. मुकेश शइकिया, पुस्तकालयाध्यक्ष, तेजपुर वि.वि.

संगोष्ठी-अध्यक्ष: डॉ.सूर्यकांत त्रिपाठी, अध्यक्ष,हिंदी विभाग,ते.वि.वि.

संगोष्ठी-निदेशक: प्रो. अनंत कुमार नाथ, हिंदी विभाग,ते.वि.वि.

संगोष्ठी-संयोजक: डॉ. अनुशब्द, हिंदी विभाग, ते.वि.वि.

संगोष्ठी सह-संयोजिका: डॉ.अंजु लता, हिंदी विभाग, ते. वि.वि.

पंजीयन–प्रपत्र

राष्ट्रीय संगोष्ठी

हिंदी विभाग,तेजपुर विश्वविद्यालय

दिनांक : 26-27 मार्च 2015

लोक और शास्त्र : जनजातीय साहित्य

1. नाम: ....
2. पता: ....
3. दूरभाष: ....
4. ई-मेल: ....
5. पुरूष/स्त्री ....
6. आवासीय सुविधा : हाँ ( ) ना ( )
7. यात्रा विवरण :
   आगमन का समय : ....
   प्रस्थान का समय : ....
8. आलेख का शीर्षक : ....
9. पंजीयन शुल्क का विवरण: राशि ....
   ड्राफ्ट विवरण /नकद ....
   दिनांक : ....हस्ताक्षर ....

साहित्य अकादेमी

तेजपुर विश्वविद्यालय

साहित्य अकादमी और हिन्दी विभाग तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

'लोक और शास्त्र: जनजातीय साहित्य'

दिनांक: 26 और 27 मार्च 2015

संयोजक

डॉ॰ अनुशब्द

हिंदी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर

आयोजक

हिंदी विभाग

तेजपुर विश्वविद्यालय,तेजपुर

असम-784028

लोक और शास्त्र : जनजातीय साहित्य

महोदय/ महोदया,

जोहार, आप सबको सूचित करते हुए हमें बेहद खुशी हो रही है कि तेजपुर विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग साहित्य अकादमी के सहयोग से 'लोक और शास्त्र : जनजातीय साहित्य' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन करने जा रहा है। जनजातीय/आदिवासी साहित्य पर केंद्रित इस संगोष्ठी में आप सब सादर आमंत्रित हैं। आदिवासी विमर्श का पठन-पाठन अभी हालिया परिघटना है। कुछ सालों पहले यह विषय भी दलित विमर्श की तरह ही उपेक्षा का शिकार था। ऐसा नहीं है कि आदिवासियों के ऊपर लिखा ही न गया हो। गैर-आदिवासी लेखकों ने आदिवासी जीवन पर भी अपनी लेखनी यदा-कदा चलाई है। किंतु दिकू लेखकों का यह लेखन आदिवासी जीवन को मुख्यधारा के तमाम पूर्वाग्रहों के साथ ही देखता आया है। वहाँ आपको आदिवासियों के प्रति एक प्रकार का औपनिवेशिक दृष्टिकोण मिलेगा जहाँ आदिवासियों को असभ्य, जंगली, बर्बर और पिछड़ा चित्रित किया गया है। इसी दृष्टि का एक नवउपनिवेशवादी संस्करण आजकल राष्ट्रीय आर्थिक विकास के गैर आदिवासी बटखरों पर आदिवासी समाज-संस्कृति को तौलता है और उन्हें राष्ट्र के लिए अनुपयोगी सिद्ध करके बट्टे खाते में डाल देता है। आदिवासियों की स्वायत्त अस्मिता और स्वतंत्र जीवन दर्शन से इस श्रेणी के विद्वानों का कोई लेना-देना नहीं होता। सांस्कृतिक राष्ट्रवादी तो आदिवासियों को हिंदू राष्ट्रवाद के नाम पर आत्मसात कर जाना चाहते हैं। उनके जी. एस. घुर्ये जैसे विचारक आदिवासियों को पिछड़ा हिंदू साबित करने में एड़ी चोटी का जोर लगा देते हैं। लेकिन बड़े खेद की बात है कि घोषित मार्क्सवादी लेखक तक आदिवासियों के साथ न्याय नहीं कर सके हैं। राहुल सांकृत्यायन जैसे बड़े लेखक तक हिमाचल के आदिवासियों को विकास के महाख्यान के खांचे में रखकर ही देखते रहे। आदिवासियों के प्रति एक दूसरा नजरिया पश्चिम के नृतत्वशास्त्रियों का रहा है जो मुख्य धारा से कटे हुए आदिवासियों के आदिम एकाकी जीवन को एक प्रकार के नॉस्टेल्जियाई रोमांटिक दृष्टि से देखते थे। वैरियर एल्विन इस धारा के प्रतिनिधि कहे जा सकते हैं। वे आदिवासियों को हर तरह की बाहरी छूत से बचाये रखना चाहते थे ताकि उनकी सहज स्वाभाविक जीवन पद्धति, कलात्मक सौंदर्य दृष्टि और समतामूलक समाज व्यवस्था पर कहीं कोई क्षति न पहुंचे। स्वातंत्र्योत्तर भारत में नेहरू सरकार की आदिवासियों के प्रति राजकीय नीति वैरियर एल्विन के आदर्श का अनुकरण करती थी। यह रोमांटिक नजरिया आदिवासियों की संस्कृति को नितांत निष्पाप और सहज प्राकृतिक संबंधों पर आधारित आदर्श मानव संस्कृति के प्रतिदर्श के रूप में देखता है। लेकिन ये दोनों दृष्टिकोण और उन पर आधारित दिकू साहित्य अपने आप में आधे-अधूरे हैं। एक आदिवासी स्वयं अपने जीवन और समाज के बारे में क्या राय रखता है, उसका अपना स्वायत्त-जीवन दर्शन किसप्रकार का है, वह प्रगति और सुशासन का क्या अर्थ रखता है और 'अच्छे दिनों' को लेकर उसके अपने स्वप्न क्या हैं, ये सब जानने-समझने के लिए आपको जनजातीय/आदिवासी साहित्य से मुठभेड़ करनी होगी। उस साहित्य का साक्षात्कार करना होगा जो बंद कमरे में सुनियोजित शास्त्रीय चिंतन के पैमानों के परिप्रेक्ष्य में निर्मित नहीं किया जाता, जिसकी आत्मा शास्त्र में नहीं लोक में बसती है। किंतु यहां उस पेच को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि यह आदिवासी लोक हिंदू लोक नहीं है, यह तो आदिवासियों की अपनी पुरखौती परंपराओं का लोक है। जनजातियों/आदिवासियों के इस लोक साहित्य का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि दिकू लेखकों के लिखित साहित्य से आप जनजातियों/आदिवासियों को नहीं समझ सकते। अगर आपको भारत की भाषाई समृद्धि का संरक्षण करना है, तो इस आदिवासी साहित्य के पास जाना ही होगा। आदिवासी और गैर-आदिवासी लेखकों द्वारा इधर कुछ समय से जनजातीय/आदिवासी जीवन पर काफी लिखा जा रहा है और मोटा-मोटी आदिवासी साहित्य को दलित विमर्श के खाने में डालकर ही देखने का चलन रहा है किंतु अब समय आ गया है कि जनजातीय/आदिवासी विमर्श के अपने विशिष्ट आयामों पर बात की जाये। दलित विमर्श और आदिवासी विमर्श के रिश्तों की पड़ताल की जाये। यहाँ यह सवाल बड़ा मौजूं होगा कि शास्त्र और लोक का द्वंद्व दलित साहित्य और आदिवासी साहित्य में क्या-क्या रूप अख़्तियार करता है। आज के भूमंडलीय उत्तर आधुनिक समय में जहाँ गैर-आदिवासी लोक,धर्म और संस्कृति के मकड़जाल में उलझकर कार्पोरेटी सभ्यता के सामने हथियार डाल चुका है, वहाँ आदिवासियों का प्रतिरोध कुछ आशा जगाता है और आदिवासियों के जीवन से जुड़े होने से, उनकी अपनी मौखिक परंपरा में विकसित होने से यह प्रतिरोध का स्वर आपको आदिवासी लोक साहित्य में साफ सुनाई देगा। बाज़ारमूलक उपभोक्तवादी सभ्यता के बरक्स प्रकृति के साथ निकट रिश्तों पर आधारित समतामूलक आदिवासी संस्कृति की अनुगूंज में आप गांधी के ग्राम स्वराज की ध्वनि भी सुन सकते हैं। आदिवासी साहित्य में राज्य के प्रति जो आक्रोश स्थान लेता जा रहा है, उसे भी समझना आवश्यक है। विदेशी साम्राज्यवाद से दो-दो हाथ करने वाले आदिवासी अगर आज राज्य से अपने देय का हिसाब-किताब मांग रहे हैं, तो यह उनका वाजिब हक है। और, आदिवासियों की यह अदम्य जिजीविषा ही नवपूंजीवादी गुलामी की ओर बढ़ते राष्ट्र के लिए उम्मीद की एक किरण है। आशा और विश्वास की इसी लौ के लिए हमें आदिवासी लोक और उसके लिखित-गैर लिखित साहित्य के साथ दोस्ती करनी होगी, जान-पहचान बढ़ानी होगी, संवादहीनता की बर्फ तभी पिघलेगी, रिश्तों की तल्खी तभी दूर होगी।

मुख्य विषय : 'लोक और शास्त्र : जनजातीय साहित्य'

उपविषय :

- लोक साहित्य और जनजातीय/आदिवासी जीवन
- लोक और शास्त्र का अंतःसंबंध तथा जनजातीय/आदिवासी साहित्य
- जनजातीय/आदिवासी साहित्य में लोक और शास्त्र का द्वंद्व
- लोक साहित्य में पूर्वोत्तर भारत का जनजातीय/आदिवासी जीवन
- पूर्वोत्तर भारत की जनजातीय भाषाओं का साहित्य
- जनजातीय भाषाओं में आपसी संवाद और अनुवाद की स्थिति
- हिन्दी और जनजातीय भाषाओं के बीच अनुवाद की समस्या
- विभिन्न विधाओं(कविता,कहानी,उपन्यास,सिनेमा आदि) में जनजातीय/आदिवासी जीवन
- दलित विमर्श बनाम जनजातीय/आदिवासी विमर्श
- जनजातीय/आदिवासी साहित्य और समाज में नारी की स्थिति
- लोक साहित्य की विभिन्न विधाओं (लोककथा, लोकगाथा, लोकगीत,लोकनाट्य आदि) में जनजातीय जीवन

*उपर्युक्त उपविषयों के अतिरिक्त मूल विषय से संबंधित विषयों पर भी आलेख आमंत्रित हैं।